CSIR in Media

Platinum Jubilee 1942-2016

75 Years of

CSIR Touching Lives

News Bulletin

21st to 31st January 2019

Produced by Unit for Science Dissemination, CSIR, Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi

इस अवसर पर विद्यालय के तीन … गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

किसान जैविक खेती पर दें ध्यान

दिव्य हिमाचल टीम- पालमपुर

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में खेती में जैविक खाद का उपयोग विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन को किया गया।

संस्थान पिछले कई वर्षों से सूक्ष्म जीवों से जैविक खाद को विकसित करने की दिशा में कार्य कर रहा है, इसके लिए विभिन्न किस्म के सूक्ष्म जीवी, हिमाचल की प्राकृतिक मृदा से खोजे गए है, जिनमें मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और पौधों के उत्तम विकास में सहायक कारक है। कार्यक्रम के लिए संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने आशा व्यक्त किया कि यह प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम, सभी प्रतिभागियों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा और किसान जैविक खेती पर विशेष ध्यान देंगे, जो कृषि उत्पादकता बढ़ाने के साथ ही रसायनिक खाद के अत्यधिक उपयोग को कम करता है। प्रशिक्षण के संयोजक डा. कुणाल सिंह ने बताया कि जैविक खाद की खेती में उपयोगिता तथा जैविक खाद के प्रयोग करने की विधि पर विस्तार में चर्चा हुई।

कार्यक्रम में संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिको ने एकीकृत पौध पोषण प्रबंधन, शिटाके मशरूम की खेती, फूलों की खेती और उनका महत्त्व व जैवक कीटनाशक और उनका उपयोग विषयों पर भी प्रकाश डाला। डाक्टर अपर्णा मैत्रा पति ने विभिन्न पंचायतों एवं पंजाब प्रांत से आए किसानों का आभार व्यक्त किया।

Published in:
Divya Himanchal

First-ever international seaweed expo starts in Mumbai

CSIR-CLRI,IITR

26th January, 2019

Three centres for solar energy research launched

TNN | Updated: Jan 26, 2019, 11:12 IST

A- A+

Representative image

CHENNAI: Three centres that bring together researchers from premier academic institutes, scientists from national laboratories, experts from industries and government departments to undertake research and development and come up with customised solutions in the field of solar energy and water management were launched on Friday.

The three DST Technology Mission Centres, set-up at a cost Rs 50 crores, were launched by Harsh Vardhan, minister for science, technology and earth sciences and environment, forests and climate change.

Speaking at the launch, the minister urged scientists working across various academic institutes and national laboratories to ensure optimal coordination among themselves and with researchers abroad, as it can yield better results faster. “There is a need for optimal coordination, as scientists benefit from each other’s experiences. The department of science and technology too has several science programmes that help and support scientists who want to conduct research abroad or within the country,” he said.

LATEST COMMENT

Excellent for future generations

sivakumar subramaniam

SEE ALL COMMENTS ADD COMMENT

One of the three DST centres is a test bed for solar thermal desalination solutions established by IIT Madras and Empereal KGDS in Narippaiyur in Ramanathapuram district to develop customised technological solution to address water challenges in the arid coastal village. The facility is being set up at a cost of Rs 3 crores to demonstrate solar powered forward osmosis to produce good quality drinking water from seawater that would benefit approximately 10,000 people in the village, who are facing severe drinking water crisis. This customised solution would involve using solar energy partially to convert seawater into potable water.

Other two centres, include the DST-IITM Solar Energy Harnessing centre, which will focus on a wide range of research and technology development activities like silicon solar cells. The centre will also work on solar thermal technologies, energy storage systems and utilising solar energy to produce fuels. A network of researchers from IIT Madras, IIT Guwahati, Anna University, ICT Mumbai, BHEL and KGDS would be jointly working in the centre. The DST-IIT-M Water Innovation Centre for Sustainable Treatment, Reuse and Management of Efficient, Affordable and Synergistic Solutions (SUTRAM) of Easy Water will undertake research and training programmes on issues related to wastewater management, water treatment, sensor development, storm water management and distribution and collection systems. Led by IIT Madras, eight partnering institutions like CSIR-CLRI and Indian Institute of Toxicological Research, Lucknow will be conducting research.

Published in:
The Times of India

CSIR-CBRI

26th January, 2019

छात्रों को बताए वैज्ञानिक अनुभव

प्रतियोगिता में केंद्रीय विद्यालय नंबर-1 को स्वर्ण और एबीएन स्कूल को मिला रजत पदक

अमर उजाला ब्यूरो

रुड़की। सीबीआरआई में समावेशी और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने, सभी के लिए शिक्षा का महत्तव समझाने और आजीवन सीखने के अवसरों के महत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिज्ञासा कार्यक्रम के तहत विद्यार्थी, वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम के दूसरे दिन विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और जिज्ञासा कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने समझाया कि हर चीज, हर अनुभव को नए नजरिए से देखें तो हमारे अनुभव पहले से ज्यादा सुखद हो सकते हैं। नया सीखने के लिए पुराना भुलना भी आसानी से आना चाहिए। इस मौके पर वैज्ञानिक डॉ. कुलवंत सिंह, डॉ. एलपी सिंह, डॉ. एके मिनोचा, निदेशक डॉ. एन गोपाल कृष्णन, एसके सिंह, श्रीनिवास राव, हरीश कुमार, प्रदीप आदि रहे।

सीबीआरआई में जिज्ञासा कार्यक्रम में सम्मानित छात्र-छात्राएं। अमर उजाला

अपूर्व व अंशुमान की टीम को स्वर्ण पदक

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विज्ञान और गणित आदि विषयों पर अधारित प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में केंद्रीय विद्यालय नंबर-1 के अपूर्व और अंशुमान की टीम को प्रथम स्थान के साथ स्वर्ण पदक, आदर्श बाल निकेतन के वचन दास और सौम्या अग्रवाल की टीम को द्वितीय स्थान और रजत पदक तथा आर्मी पब्लिक स्कूल-2 के अनुज और उत्कर्ष की टीम को तीसरे स्थान पर कांस्य पदक तथा आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज की जैनब खान और संजना गौतम की टीम को चौथे स्थान पर सांत्वना पदक प्राप्त हुआ।

Published in:
Amar Ujala, Page 9

CSIR-NML

26th January, 2019

टीएसटीआइ के स्टूडेंट्स ने किया एनएमएल का दौरा

जमशेदपुर. टाटा स्टील टेक्निकल इंस्टीट्यूट (टीएसटीआइ) के विद्यार्थियों ने शुक्रवार को एनएमएल का दौरा किया. इस दौरान इंस्टीट्यूट से डिप्लोमा कर रहे कुल 33 विद्यार्थियों के साथ ही दो शिक्षिकाएं (शारदा कुमारी व आकांक्षा जीवातोडे) वहां पहुंची थीं. उन्होंने वहां देश में विभिन्न प्रकार के होने वाले आविष्कारों को जाना. प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ पीएन मिश्रा ने सभी का स्वागत किया और प्रोजेक्ट जिज्ञासा की जानकारी दी. चीफ साइंटिस्ट डॉ एसके मंडल ने सभी को कहा कि वे रिसर्च से जुड़ें. उन्होंने एनएमएल में होने वाले कार्यों से भी सभी को अवगत कराया. इस दौरान करीब तीन घंटे तक सभी एनएमएल में रहे.

Published in:
Prabhat kahbar, Page 10

CSIR-CBRI

25th January, 2019

जिज्ञासा कार्यक्रम में बच्चों को जानकारी दी

रुड़की | **कार्यालय संवाददाता**

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में अंतरराष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर जिज्ञासा कार्यक्रम हुआ। इसके तहत दो दिवसीय विद्यार्थी-वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम शुरू हुआ। इसमें विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र मुंबई के पदार्थ विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. कुलवंत सिंह ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारण करना आवश्यक है। हमें अपना लक्ष्य निर्धारित कर, आलस्य त्याग कर, पूर्ण निष्ठा व मेहनत के साथ कर्म करना चाहिए।

संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एके मिनोचा ने सभी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा सभी का मूल अधिकार है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व के बारे में बताया। सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुवीर सिंह ने अग्नि अनुसंधान पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलेज, गांधी महिला शिल्प विद्यालय इंटर कॉलेज, केंद्रीय विद्यालय न. 1 के करीब 200 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के सहित कार्यक्रम में प्रतिभागिता किया। इस अवसर पर डॉ. एलपी. सिंह, अनिल कुमार, श्रीनिवास राव, हरीश कुमार, प्रदीप कपूरिया, दिलशाद, पलक गोयल आदि मौजूद रहे।

रुड़की के सीएसआईआर में गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं को जानकारी देते वैज्ञानिक। ● हिन्दुस्तान

Published in:
Hindustan, Page 10

CEMILAC clears Biojet fuel for Aircraft; IAF to operate biojet fuel flight on January 26

CSIR-IIP

25th January, 2019

After months of ground and flight trials, the **Centre for Military Airworthiness and Certification (CEMILAC)**, a premier military certification agency, on January 22, 2019 cleared the use of indigenously produced bio-fuel for use in the military aircraft. P Jayapal, Outstanding Scientist and Chief Executive of the Centre for Military Airworthiness and Certification deliberated on the results of various tests conducted on bio-jet fuel as per procedure recommended by top certification agencies. Only after complete satisfaction with the performance parameters, the agency formally granted its approval for use of this fuel.

This clearance is a major step for continued testing and eventual full certification of the bio-jet fuel for use on a commercial scale by civil aircraft as well. For use of bio-jet fuel on all military and civilian aircraft, the Bureau of Indian Standards (BIS), in collaboration with the Indian Air Force brought out a new standard for Aviation Turbine Fuels. These specifications align Indian standards with current international standards.

First flight of aircraft with a blend of bio-jet fuel on January 26

The approval will enable the Indian Air Force to fulfil its commitment to fly the maiden IAF An-32 aircraft on January 26, 2019 with a blend of bio-jet fuel.

Role of Centre for Military Airworthiness and Certification (CEMILAC) Any hardware or software which is to be used on Indian military aircraft, including those operated by Indian Navy or Army, has to be cleared for use by

CEMILAC before being inducted for regular use.

Production of Biojet fuel

The Biojet fuel is produced from non-conventional source that is non-edible vegetable or tree borne oil. The bio-jet fuel has been produced from seeds of Jatropha plant sourced from Chhattisgarh and processed at CSIR-IIP's lab at Dehradun. This fuel will now be used on military aircraft.

Significance

Increased demand of bio-jet fuel would give impetus to increase in collection of tree-borne non-edible oil seeds, which, in turn, will help generate additional income, increase remuneration for tribal and marginal farmers, and stimulate collection of oilseeds.This is also a significant development that could reduce the carbon emissions and help India become a green fuel production hub.

Published in:
Jagran Josh

CSIR-IIP

24th January, 2019

देश की आर्थिक मजबूती को तेल संरक्षण जरूरी: पंत

आईआईपी में आयोजित हुई कार्यशाला

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वित्त मंत्री प्रकाश पन्त ने सीएसआइआर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम में आयोजित सक्षम संरक्षण क्षमता महोत्सव कार्यशाला में मुख्यतिथि के तौर पर प्रतिभाग किया। कार्यशाला में उपस्थित जनों को पेट्रोलियम उत्पादों के संरक्षण हेतु शपथ दिलाई।

पैट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संघ पीसीआर का एक माह का अभियान एक ऐसा ही प्रयास है। जो 16 जनवरी से शुरू होने के बाद तेल एवं गैस कंपनियों के साथ मिलकर पीसीआरए द्वारा कई कार्यकलाप शुरू किए गये हैं।

इन कार्यकलापों में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, समूह वार्ता, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद, तकनीकी कार्यशालाएं, संगीत कार्यक्रम, प्रतिभा, ईंधन कुशल रसोई प्रतियोगिता, ईंधन कुशल ड्राइविंग प्रतियोगिता, ईंधन संरक्षण और दीर्घकालिक के संदेश के प्रभावी शामिल हैं। कैबिनेट मंत्री ने कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि भारत द्वारा 70 प्रतिशत ईंधन का आयात किया जाता है जो कि विदेशी मुद्रा में कड़ी चुनौती है। ईंधन संरक्षण सीधा तौर पर हमारी आर्थिक सुदृढ़ करता है। आने जाने के लिए पैदल चलना, साइकिल चलना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, कार पुलिंग इत्यादि उपायों से ईंधन की काफी बचत की जा सकती है पीसीआरए द्वारा इस कार्यक्रम की सफलता हेतु मै आग्रह करता हूँ तेल बचत में सब सहयोग करें। भारत विश्व में पैट्रोलियम उत्पादों का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। देश की बढ़ती हुई आर्थिक प्रगति और साथ में बढ़ती आय स्तर और बढ़ती जनसंख्या के अनुसार हम वर्ष 2022 तक सकल घरेलू उत्पाद के मामले में विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे तथा पैट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती माँग को तेजी से पूरा करना देश के लिए अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाएगा। इस मौके पर अंजन रे निदेशक सीएसआईआर-आई0 आईपी, कमलजीत सिंह टैरिटरी मैनेजर भारत पैट्रोलियम,नीरज गुप्ता पीसीआरए, डी के पाण्डेय सीएसआईआर- आई आई पी के साइंटिस्ट स्टाफ, स्कूल के छात्र, छात्राएं, टिचर्स, प्रिंसिपल, तेल कंपनी के अधिकारी आदि मौजूद थे।

Published in:

Saah Times, Page 10

First-ever international seaweed expo starts in Mumbai

CSIR-CSMCRI

22nd January, 2019

Three-day event brings all stakeholders on one platform to discuss concerns, solutions

The first-ever initiative to bring all stakeholders in the seaweed industry on one platform was kicked off in Mumbai on Tuesday. The three-day event, titled 'India International Seaweed Expo and Summit' was attended by senior politicans from the State and officials from the industry. The expo was organised by the Indian Chamber of Commerce (ICC) in collaboration with the Council of Scientific and Industrial Research-Central Salt and Marine Chemicals Research Institute (CSIR-CSMCRI), and NITI Aayog. It was inaugurated by the State Fisheries minister Mahadev Jankar, ICC senior vice-president Mayank Jain and director of CSIR-CSMCRI Dr. Amitava Das. "The seaweed industry has huge potential and usage in the food, medicine, pesticide, pharmaceutical and fertilizer industries. Be it production, export or employment, seaweed has a good future in India, as it's a coastal country," Mr. Jalan said. The summit aims to create the potential to explore new business opportunities for private sector companies, coastal farmers and research and development organisations. It also aims to promote interaction between international technical experts, national scientists, industry experts, entrepreneurs, investors, and government agencies.

"There are only 14 to 15 companies in India in the seaweed industry currently. The Government of India wants to promote this sector and NITI Aayog is inviting proposals

to discuss and take forward," Dr. Anil Pratap Singh, Advisor (Agriculture), NITI Aayog, Government of India said. The seaweed industry is nascent in India with Gujarat, Kerala and Tamil Nadu as the highest producers.

"By 2050, the world will require 1.6 to 1.8 billion ton protein a year. Also, every year there is loss of species, accelerated soil erosion and pollution. The sea seems to be a good alternative for agricultural production of the extra 1/2 billion ton of protein," Dr. Amir Neori, senior researcher of Israel Oceanographic and Limnological Research Limited, National Center for Manufacture, Israel said.

The event also took into account major and emerging issues. "The complexity of export makes it difficult for local farmers to deal with outsiders, which seems to lower their income," Dr. Shrikumar Suryanarayan, Managing Director of Sea6 Energy Private Limited said.

Professor Ricardo Radulovich, Department of Biosystems Engineering, University of Costa Rica said, "The main issue is that there is no seaweed production because there is no market and as there is no market, no production. We need to break this identified cycle."
The summit also aimed to bring potential solutions on the floor. "The need of the hour is creating a conducive ecosystem, provide incentives for industries and growers. Central schemes for infrastructure development need to be launched along with fostering international collaborations and policies for a strong seaweed industry," Professor C.R.K Reddy, DBT-ICT Centre for Energy Biosciences, said.

Published in:
The Hindu

CSIR-CSMCRI

21st January, 2019

શૈક્ષણિક સમરસતા • મહત્વાકાંક્ષી 'જિજ્ઞાસા' પ્રોજેક્ટ હાથ ધરવામાં આવ્યો

એક જ ઘરેડના
રકિર્દી માહોલને
દલવા યજ્ઞ કાર્ય

ઇજનેરો અને તબીબોના ધસારા વચ્ચે સેન્ટ્રલ સોલ્ટ ઘડશે વૈજ્ઞાનિકોની ફૌજ

છેલ્લા 18 માસમાં સેન્ટ્રલ સોલ્ટની ટીમે રાજ્યમાં 2000થી વધુ બાળકોને સંબોધ્યા

ડે પોઝિટિવ

ભાવનગર | 20 જાન્યુઆરી

આ સમાજમાં ચોતરફ ઇજનેરો અ ડોક્ટરોની ફોજ વધતી જાય છે તે રાભ છે એવું નથી પણ 21મી સા ના સમાજમાં ઇજનેર અને ડો રની જેટલી જરૂર છે તેટલી જ જ વૈજ્ઞાનિકની પણ છે તે હકીકત ધ્યા લઇ ભાવનગરની સેન્ટ્રલ સોલ્ટ એ મરિન કેમિકલ્સ રિસર્ચ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ દ્વાર નવા જ અભિગમ સાથે જિજ્ઞાસા પ્રો ક્ટ હાથ ધર્યો છે જેમાં અમદાવાદ, વડ રા, સુરત, રાજકોટ, ગાંધીનગર, ભા નગર જેવા શહેરોમાં કેન્દ્રીય વિ ાલયોમાં ધો.8થી ધો.11માં ભા તા 2000થી વધુ વિદ્યાર્થીઓને છેલ્લા 18 માસમાં સંબોધ્યા છે. તો હવે 2019ના વર્ષમાં તો એક પગલું આગળ વધીને આ શાળાના શિક્ષકો માટે યોજના ઘડી છે.

ધો.12 બાદ તેજસ્વી છાત્રો ડોક્ટર કે ઇજનેર થવા જાય છે અને વાલીઓ પણ તે જ વિચારે છે ત્યારે સેન્ટ્રલ સોલ્ટ એન્ડ મરિન કેમિકલ્સ રિસર્ચ ઇન્સ્ટિટ્યૂટના વૈજ્ઞાનિકોની ટીમે જિજ્ઞાસા નામે મૂળ તો સીએસઆઇઆર દ્વાર ચલાવાતો પ્રોજેક્ટ ગુજરાતમાં 2017ના વર્ષમાં ઓક્ટોબર માસમાં અમલમાં મૂક્યો. જેમાં સંસ્થાના વૈજ્ઞાનિકો ડો.જોઇ મિત્રા, ડો.અનિલકુમાર, ડો.ભૌમિક સુતરીયા, ડો.નિસાર અહમદ અને ડો.અંકુર ગોયલ સંસ્થાના ડાયરેક્ટ અમિતાવ દાસના માર્ગદર્શન હેઠળ કાર્યરત છે.

દેશમાં 3000 શાળાઓમાં અભિયાન

ભારતમાં સીએસઆઇઆરે જૂલાઇ-2017માં જિજ્ઞાસા પ્રોજેક્ટનો આરંભ કર્યો અને બાદમાં દેશમાં 3000 જેટલી શાળાઓ આ અભિયાન માટે પસંદ કરાઇ હતી. બાદમાં ઓક્ટોબર, 2017માં ભાવનગરની સેન્ટ્રલ સોલ્ટ દ્વારા ટીમની રચના કરી આ પ્રોજેક્ટનો આરંભ કરાયો હતો.

બાળકોમાં વૈજ્ઞાનિક અભિગમ કેળવાય છે

«આ જિજ્ઞાસા પ્રોજેક્ટ હેઠળ અમે અત્યાર સુધીમાં 2000થી વધુ બાળકોને માત્ર સંબોધ્યા જ નથી પણ સાથે તેમનામાં વૈજ્ઞાનિક દ્રષ્ટિકોણ જાગે તે માટે ફિઝિક્સ, કેમેસ્ટ્રીથી લઇને પાણીનું શુદ્ધિકરણના અનુભવો લેબમાં દર્શાવ્યા છે અને છેક ઘરે માતા રસોઇ બનાવે છે તેમાં પણ વિજ્ઞાન છે તે સરળ શૈલીમાં સમજાવ્યું છે.»

ડો.અંકુર ગોયલ, વૈજ્ઞાનિક, સેન્ટ્રલ સોલ્ટ, ભાવનગર

હવે શિક્ષકો માટે પ્રોજેક્ટ શું કામ

શિક્ષકોમાં પણ વૈજ્ઞાનિક અભિગમ કેળવાય તે માટે ભાવનગરમાં આગામી મહિનાઓમાં રાજ્યભરના કેન્દ્રીય વિદ્યાલયોના ચુનંદા શિક્ષકો માટે આયોજન ઘડાયું છે અને તેમને સંસ્થામાં બોલાવી વૈજ્ઞાનિક દ્રષ્ટિકોણ સમજાવી જીવનથી લઇ કારકિર્દી સુધીમાં તેનું મૂલ્ય સમજાવવામાં આવશે. જેથી તેઓ બાળકોને સમજાવી શકે.

વિજ્ઞાન ક્ષેત્રે પૂરી તક

વિદ્યાર્થીઓને ઇજનેરી કે તબીબી સિવાય વિજ્ઞાન ક્ષેત્રે પણ દેશમાં અને વિદેશમાં પૂરી તક મળે છે તે ધો.8થી ધો.11ના બાળકોને સરળ ભાષામાં સમજાવાય છે અને ફેલોશિપ મળે, દેશ વિદેશમાં નોકરીની તક મળે સમાજમાં માન સન્માન મળે તે બધું જીવનલક્ષી જ્ઞાન અપાય છે.

Published in:
Saurashtra Samachar

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles

CSIR INDIA

CSIR_IND

CSIR India